13.07.2020
B.A I (Philosophy) Hons
1st Paper

बौद्ध दर्शन का तृतीय आर्यसत्य ।
(The Third noble truth of Buddhism.)

बुद्ध के तृतीय आर्यसत्य में बतलाया गया है कि दुःख निवृति संभव है अर्थात दुःख का विनाश संभव है। बुद्ध के द्वितीय आर्यसत्य में दुःखों का कारण बतलाया गया है। हम जानते हैं कि यदि दुःखों का कारण न रहे तो कार्य भी नहीं रहेगा। तो यदि किसी प्रकार दुःख के कारणों का नाश हो जाय, तो दुःख भी नष्ट हो जाएगा। दुःख रहित अवस्था को बौद्ध दर्शन में "निर्वाण" कहा गया है। भारतीय दर्शन में "मोक्ष" तथा "निर्वाण" समानार्थक हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख का मूल कारण "अविद्या" है। अविद्या के कारण ही संस्कार आदि बनते हैं। यदि अविद्या, संस्कार आदि का नाश हो जाय तो दुःखों का पूर्ण विनाश संभव है। इन्होंने बतलाया कि दुःखों का पूर्ण विनाश संभव है तथा इस अवस्था को "निर्वाण" कहा। बौद्ध दर्शन के तृतीय आर्यसत्य में बुद्ध इसी "निर्वाण" के स्वरूप का वर्णन करते हैं। बौद्ध दर्शन में "निर्वाण" का चित्रण एक ऐसी अवस्था के रूप में की गई है, जिसमें दुःखों का पूर्ण विनाश हो जाता है। यहाँ निर्वाण को निम्नित अर्थों में प्रयुक्त किया गया है —

(i) बौद्ध दर्शन में निर्वाण को जीवन के चरमलक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है। मनुष्य को दुःखों से पूर्ण छुटकारा दिलाना ही जीवन का चरमलक्ष्य माना गया है। यहाँ निर्वाण का चित्रण दुःख रहित अवस्था के रूप में किया गया है।

(ii) निर्वाण का एक अर्थ "बुझा हुआ" भी होता है। निर्वाण का अर्थ दुःखरूपी अग्नि का बुझ जाना है।

(iii) दुःख के नष्ट हो जाने के उपरान्त एक अपूर्व शान्ति का अनुभव होता है, जिसके कारण निर्वाण को "शान्तावस्था" भी कहा जाता है।

(iv) पाणिनि ने निर्वाण का अर्थ "बहती हुई हवा का रुक जाना" कहा है।

(v) निर्वाण का शाब्दिक अर्थ निः + वाण हुआ, अर्थात "जंगल का नष्ट हो जाना"। मानवीय जीवन में दुःख एवं व्याधियों के जंगल का नष्ट हो जाना ही निर्वाण है।

(vi) वाण का एक अर्थ दुर्गंध भी होता है। स्वार्थपूर्ण एवं बुरे कर्म दुर्गंधयुक्त होने के कारण निर्वाण का अर्थ हुआ, इन बुरे तथा अशुभ कर्मों के दुर्गंध से मुक्ति हो जाना प्राप्त कर लेना। इस अवस्था में

व्यक्ति अशुभ तथा बुरा कर्म नहीं करता।

(vii) वाण का एक अर्थ "बुनना" भी होता है। व्यक्ति स्वयं के जीवन में कर्मों का जाल बुनते जाता है तथा अन्ततः स्वयं उसमें फँस जाता है। कर्म रूपी जाल से मुक्त हो जाने को ही निर्वाण कहा गया है। निर्वाण की अवस्था में मनुष्य कर्म रूपी बंधन से मुक्त हो जाता है।

(viii) वाण का एक अर्थ "पुनर्जन्म का रास्ता" के रूप में भी लिया गया है। अविद्या तथा अज्ञानता के कारण व्यक्ति जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसता रहता है। निर्वाण की अवस्था में व्यक्ति इस चक्र से मुक्त हो जाता है।

निर्वाण का शाब्दिक अर्थ बुझा हुआ भी होने के कारण पर कुछ विद्वान इसे "अस्तित्वविनाश" के अर्थ में भी लेते हैं। इनका निर्वाण में मनुष्य के अस्तित्व का विनाश हो जाता है। किन्तु बौद्धमत में निर्वाण दुःखों का विनाश करता है, अस्तित्व का विनाश नहीं। निर्वाण प्राप्त व्यक्ति स्वयं के अस्तित्व को कायम रखते हुए जनकल्याण के कार्यों में संलग्न रह सकता है। महात्मा बुद्ध स्वयं इसके उदाहरण हैं कि उन्होंने निर्वाण प्राप्ति के उपरान्त भी अपना अस्तित्व बरकरार रखते हुए अस्सी वर्ष की आयु तक जनकल्याण के कार्यों में स्वयं को लिप्त रखा।

कुछ लोगों द्वारा निर्वाण को निष्क्रियता तथा अकर्मण्यता की अवस्था माना जाता है, किन्तु यह कहना सर्वथा अनुचित तथा निरर्थक है कि निर्वाण निष्क्रियता तथा अकर्मण्यता की अवस्था है। महात्मा बुद्ध स्वयं इसके उदाहरण हैं कि निर्वाण प्राप्ति के उपरान्त भी उन्होंने सदैव जनकल्याण तथा लोकहित के कार्यों को किए तथा अन्य लोगों को स्वयं के ज्ञान के द्वारा दुःख रूपी भव सागर से पार उतारने हेतु स्वयं कोशिशरत रहे।

निर्वाण के स्वरूप के संबंध में कहा जा सकता है कि इसका स्वरूप अवर्णनीय है। इसकी शाब्दिक अभिव्यक्ति संभव नहीं है। नागसेन ने निर्वाण के स्वरूप के संबंध में (उपमाओं की मदद से) कहा है

का प्रचार किया है कि "निर्वाण समुद्र की भाँति गहरा, पर्वत की भाँति ऊँचा और मधु की भाँति मीठा है।" डा० दासगुप्ता ने भी अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि "यह एक ऐसी अवस्था है, जहाँ सभी लौकिक अनुभव निषिद्ध हो जाते हैं। इसका विवेचन भावात्मक प्रणाली से शायद ही संभव है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्वाण का स्वरूप अवर्णनीय तथा अनिर्वचनीय है।

निर्वाण की प्राप्ति जीवन रहते भी की जा सकती है। जिस प्रकार मुक्ति के दो प्रकार तथा भेद हैं – जीवनमुक्ति तथा विदेह मुक्ति उसी प्रकार निर्वाण तथा परिनिर्वाण में भी अन्तर किया जा सकता है। शरीर धारण करते हुए इसी जीवन में मुक्ति प्राप्त करना "निर्वाण" है तथा मृत्यु के उपरान्त मुक्ति पाना "परिनिर्वाण" कहलाता है। अर्थात जीवन रहते भी निर्वाण की प्राप्ति संभव है।

यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या स्वभावतः निर्वाण प्राप्त व्यक्ति के कर्म संस्कार उत्पन्न नहीं होता? क्योंकि स्वाभाविक: ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति के कर्म से संस्कार उत्पन्न होते हैं तथा व्यक्ति स्वयं के ~~कर्म के~~ संस्कारों के जाल में फँस जाता है। किन्तु बौद्ध मतानुसार निर्वाण प्राप्त व्यक्ति के कर्म साधारण कर्म नहीं होकर लोकहित तथा जनकल्याण की भावना से प्रेरित होने के कारण उसी प्रकार संस्कार उत्पन्न नहीं करते जिस प्रकार भुने हुए बीज से पौधे नहीं निकलते। अर्थात निष्काम कर्म से संस्कार की उत्पत्ति नहीं होती।

निर्वाण प्राप्त व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। पुनर्जन्म के नष्ट होने से वह सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त हो जाता है तथा दुःख रहित अवस्था को प्राप्त होता है। निर्वाण प्राप्त व्यक्ति एक ~~शाश्वत सुख तथा~~ अतीव शान्ति का अनुभव करता है।

डा० सन्तोष कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र,
जननायक सिंह कॉलेज, बिक्रमगंज (रोहतास)
दिनांक: 13.07.2020